निदानात्मक कक्षाओं हेतु मॉड्यूल

सत्र 2023-24

कक्षा- 10वीं

विषयः हिन्दी

पढ़े चलो, बढ़े चलो

समग्र शिक्षा अभियान (सेकेण्डरी एजुकेशन)
लोक शिक्षण संचालनालय, भोपाल (म.प्र.)

@ASK_Classes

@ASK_Classes

निदानात्मक कक्षाओं हेतु मॉड्यूल

सत्र 2023-24

कक्षा : 10वीं

विषयः हिन्दी

पढ़े चलो, बढ़े चलो

समग्र शिक्षा अभियान (सेकेण्डरी एजुकेशन)
लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र.,भोपाल

आमुख

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिनु निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार,
सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार ।

(भारतेन्दु हरिश्चंद्र)

भाषा व्यक्तित्व विकास में सहायक है। भाषा का अध्ययन विद्यार्थी को न केवल संस्कारवान बनाता है वरन् भाषा विद्यार्थी के चहुँमुखी विकास के उत्तरदायित्व का निर्वहन भी करती है। हिन्दी भाषा और इसका साहित्य मानव को मानवता की ओर अग्रसर करता है।

आप सभी को विदित है कि परीक्षा परिणाम के दृष्टिकोण से लगभग 40: से 50: विद्यार्थी वाँछित दक्षता प्राप्त करने में असफल रहते हैं। हिन्दी भाषा में दक्षता में निरंतर सफलता का स्तर अन्य विषयों की अपेक्षा तो अधिक है किन्तु हिन्दी भाषा में दक्षता में कमीं का प्रभाव अन्य विषयों की दक्षता पर भी पड़ता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए एवं विद्यार्थियों को दक्षता स्तर तक पहुँचाने हेतु निदानात्मक कक्षाओं हेतु एक मॉड्यूल तैयार किया गया है।

ऐसे विद्यार्थी जो त्रैमासिक परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सके हैं उनके लिए निदानात्मक कक्षाएँ होंगी। निदानात्मक कक्षाओं में मुख्यतः उन इकाइयों पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा जो विद्यार्थियों के सीखने की दृष्टि से सरल हों तथा कम समय में भी बार.बार अभ्यास करके उन इकाइयों से संबंधित प्रश्नों को हल कर सकें। आप सब ब्लू प्रिंट से परिचित हैं। इसमें इकाई वार अंकों का आवंटन होता है। निदानात्मक कक्षाओं हेतु तैयार किए गए इस मॉड्यूल का आधार कक्षा 9वीं/10वीं के लिए माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा निर्धारित ब्लूप्रिन्ट है, जिसके आधार पर हिन्दी की निदानात्मक कक्षाओं के लिए इकाई वार प्राथमिकता का क्रम निर्धारित किया गया है।

इस प्रकार निदानात्मक कक्षाओं में मॉड्यूल में दी गई विषयवस्तु का अध्यापन एवं अभ्यास नियमित कराया जाता है, तो विद्यार्थी हिन्दी विषय में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त कर भविष्य में निरंतर अध्ययन की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

इस दृष्टि से हिन्दी विषय 9वीं/10वी के लिए तैयार किए गए मॉड्यूल में शिक्षण संकेत भी प्रदान किए गए हैं, साथ ही शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु विविध गतिविधियों का भी समावेश किया गया है। मॉड्यूल हिन्दी के विषय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों हेतु निश्चित तौर पर उपयोगी होगा इसी आशा के साथ.....

निदानात्मक कक्षा अध्यापन हेतु प्राथमिकता का क्रम

कक्षा : 10वीं

इकाई के अध्यापन का क्रम	इकाई क्र.	इकाई एवं विषय वस्तु	आवंटित अंक
1	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	**इकाई 1 से इकाई 5 तक के वस्तुनिष्ठ प्रश्न (कुल 30 अंक)**	
2	6	**अपठित बोध** अपठित काव्यांश/अपठित गद्यांश	04
3	7	**पत्र – लेखन** औपचारिक पत्र/अनौपचारिक पत्र	04
4	8	अनुच्छेद लेखन /संवाद लेखन /विज्ञापन लेखन निबन्ध लेखन (रूपरेखा सहित)	07
5	3	**क्षितिज भाग–2 गदय खण्ड–** • नेताजी का चश्मा • बालगोबिन भगत • लखनवी अंदाज • एक कहानी यह भी • नौबतखाने में इबादत • संस्कृति • गद्य की प्रमुख एवं गौण विधाएँ • लेखक परिचय • व्याख्या (सन्दर्भ, प्रसंग, व्याख्या, विशेष) • विषय वस्तु एवं विचार बोध पर आधारित प्रश्न	17
6	1	**क्षितिज भाग–2 काव्य खण्ड** • ऊधौ तुम हौं अति बढ़भागी, मन की मन ही माँझ रही हमारैं हरि हारिल की लकरी, हरि हैं राजनीति पढ़ि आए • राम–लक्ष्मण परशुराम संवाद • आत्मकथ्य • उत्साह • अट नहीं रही है • यह दंतुरित मुसकान • फसल • संगतकार • पद्य साहित्य का इतिहास एवं काल विभाजन, रीतिकाल, आधुनिक काल (प्रयोगवाद, प्रगतिवाद, नई कविता) • कवि परिचय • भावार्थ (सन्दर्भ, प्रसंग, भावार्थ, काव्य सौन्दर्य) • सौन्दर्य बोध तथा भाव एवं विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न	17

7	2	**काव्य बोध–** • काव्य की परिभाषा एवं भेद (प्रबन्ध काव्य के भेद) • रसः अंग एवं प्रकार उदाहरण सहित • छन्दः दोहा एवं चौपाई • **अलंकार** : मानवीकरण, पुनरुक्तिप्रकाश, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति अलंकार	10
8	4	**भाषा बोध–** • संधि एवं समास (भेद एवं उदाहरण) वाच्य, क्रिया के भेद एवं क्रिया विशेषण • मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ, अनेकार्थी शब्द, वाक्यांश के लिए एक शब्द • वाक्य के भेद (अर्थ के आधार पर) • शब्द शक्ति एवं शब्द गुण का सामान्य परिचय	08
9	5	**कृतिका भाग–2** • माता का अँचल • साना–साना हाथ जोड़ि.... • मैं क्यों लिखता हूँ ? पूरक पाठ्यपुस्तक से विविध पाठों पर आधारित प्रश्न	08
		कुल योग	75

(उपरोक्त पाठ्यक्रम के अनुसार म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा सत्र 2023–24 में प्रकाशित पाठ्यपुस्तक ही अधिकृत है)

नोट –

प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक 30 वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, प्रत्येक प्रश्न पर 01 अंक निर्धारित है।

प्रश्न क्रमांक 1– सही विकल्प 06,

प्रश्न क्रमांक 2– रिक्त स्थान 06,

प्रश्न क्रमांक 3– सत्य/असत्य 06,

प्रश्न क्रमांक 4– सही जोड़ी 06,

प्रश्न प्रमांक 5– एक वाक्य में उत्तर 06

प्रश्न क्रमांक – 6 से 17 तक कुल 12 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न पर 02 अंक निर्धारित हैं।

प्रश्न क्रमांक – 18 से 20 तक कुल 03 प्रश्न होंगे प्रत्येक प्रश्न पर 03 अंक निर्धारित हैं।

प्रश्न क्रमांक – 21 से 23 तक कुल 03 प्रश्न होंगे प्रत्येक प्रश्न पर 04 अंक निर्धारित हैं।

1–वस्तुनिष्ठ प्रश्न

ब्लूप्रिंट के अनुसार इकाई 1 से इकाई 5 तक के पाठ्यक्रम से 30 अंक के वस्तुनिष्ठ प्रश्न परीक्षा में पूछे जाएँगे।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न हेतु गतिविधि

शिक्षकों को निदानात्मक कक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की तैयारी करवाने पर विशेष ध्यान देना होगा। इसके लिए निम्नलिखित गतिविधियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

गतिविधि क्रमांक–1

➢ **प्रश्नमंच प्रतियोगिता**

(1) विद्यार्थियों को छः समूहों में विभाजित कर समूहों को हिन्दी साहित्यकारों के नाम दिए जाएँ। अर्थात् साहित्यकारों के नाम पर समूह का नाम रखा जाए।

(2) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के प्रकारों के आधार पर 5 राउण्ड या चरणों में प्रश्नमंच का आयोजन किया जाए। जैसे :–

(क)	पहला चरण	बहुविकल्प
(ख)	दूसरा चरण	रिक्त स्थान
(ग)	तीसरा चरण	सही जोड़ी (श्यापट्ट पर लिखकर)
(घ)	चौथा चरण	एक वाक्य में उत्तर
(ड.)	पाँचवा चरण	सत्य/असत्य

(3) अंत में विजेता समूह की घोषणा कर पुरस्कृत किया जाए। अन्य समूहों को आगे बेहतर करने की प्रेरणा शिक्षक द्वारा प्रदान की जाए।

गतिविधि क्रमांक–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लिए शिक्षक पाठ को पढ़ाते समय 20 स्मरणीय बिन्दुओं को रेखांकित करके छात्रों में एक–एक बिन्दु या संख्या दे दें। मान लीजिए कक्षा में 40 छात्र हैं। बिन्दु 20 है तो क्रमांक 1 से 20 तक बिन्दु बाँट दीजिए व 21 से 40 तक छात्रों को पुनः बिन्दु क्रमांक 1 से 20 बाँट दीजिए। इन बिन्दुओं को सभी अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे। इस प्रकार प्रत्येक छात्र एक–एक बिन्दु लिखेगा। इसके बाद उस बिन्दु से ही प्रश्न बनवा लीजिए। सभी छात्रों के पास 1 प्रश्न व 1 उत्तर रहेगा। अब बारी–बारी से छात्र अपने प्रश्न सुनाएंगे। सभी छात्र दोहराएँगें फिर वह उत्तर सुनाएँगें। सभी उत्तर दोहराएँगे। इस प्रकार सभी छात्रों को एक कालखण्ड में 20 वस्तुनिष्ठ प्रश्न याद हो जाएँगे तथा प्रश्न बनाना भी आ जाएगा।

गतिविधि क्रमांक–3

गतिविधि क्रमांक–3 प्रतिदिन छात्रों को 10 से 15 वस्तुनिष्ठ प्रश्न याद करवाएँ। इन प्रश्नों को कालखण्ड में सबसे पहले याद करवाएँ जिससे वे अच्छे अंक प्राप्त कर सकें। वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रश्नबैंक में इकाई–वार दिए गए हैं। उन्हीं प्रश्नों को हल करवाएँ।

गतिविधि क्रमांक–4

अनुक्रमणिका/विषयसूची छात्रों को तैयार करवाएँ। इसके लिए एक तालिका बनाकर बच्चों को दें, जिसमें पाठ का नाम, पाठ की विधा एवं कवि/लेखक का नाम सम्मिलित हो। यह तालिका तैयार करवाने से छात्रों को 6 से 7 अंक परीक्षा में असानी से प्राप्त हो सकेंगे।

गतिविधि क्रमांक–5

(1) पूर्व में छात्रों को तीस या चालीस प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न) लिखवा दिए जाएँ।

(2) छात्रों से क्रमवार गिनती बुलवाई जाए। छात्र जो अंक बोलेगा वही क्रम का वह वस्तुनिष्ठ प्रश्न और उत्तर दोनों याद करेगा।

(3) सभी छात्रों को केवल पाँच मिनट का समय दिया जाएगा।

(4) पहला प्रश्न एक अंक बोलने वाला छात्र सुनाएगा। बाकी छात्र प्रश्न व उत्तर दोहराएँगे।यही क्रिया 7 प्रश्नों तक चलेगी। इसी बीच शिक्षक अवलोकन कर जो छात्र नहीं बोल पा रहे हैं, उनका नाम नोट करके बाद में उसे पुनः याद करवा सकते हैं।

(5) इस प्रकार एक कालखंड में कम से कम 20 या 30 प्रश्न छात्र केवल सुनकर याद कर सकेंगे।

गृहकार्य

शिक्षक प्रतिदिन 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न छात्रों को घर से तैयार कर लाने को कहें और अगले दिन सर्वप्रथम उन्हीं प्रश्नों की कक्षा में पुनरावृत्ति करवाएँ।

अभ्यास हेतु निर्देश

शिक्षक वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा नवीन सत्र हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।

इकाई – 6 अपठित बोध

निर्धारित इकाई से 4 अंक का प्रश्न परीक्षा में पूछा जाएगा।

निर्धारित ब्लूप्रिंट के अनुसार इस इकाई से 4 अंक का एक अपठित गद्यांश अथवा अपठित काव्यांश पूछा जाता है। जिसके अंतर्गत् एक अपठित गद्यांश व अपठित काव्यांश परीक्षा में दिया जाता है और उससे सम्बन्धित 3 से 4 प्रश्न पूछे जाते हैं। जिनका अंक विभाजन सामान्यतः निम्नलिखित आधार पर होता है–

प्रश्न–1	शीर्षक	– 01 अंक	कुल अंक 04
प्रश्न–2	लघुउत्तरीय प्रश्न	– 01 अंक	
प्रश्न–3	केन्द्रीय भाव/सारांश	– 02 अंक	

उदाहरण : निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनिए –

तहखाने के अंदर जाऊँ, न जाऊँ, कुछ देर तक दुविधा में पड़ा रहा। फिर जोर से साँस ली और कलेजे को पत्थर बना लिया। कौतूहलवश नीचे झुका इतने बरसों से तहखाने में भरी हुई विषैली हवा निकल चुकी होगी और अब वहाँ ताजी हवा फैली हुई होगी, इस विचार के साथ लंबे–चौड़े सपाट पत्थर पर हाथ रखकर एक पाँव सुरंग के अंदर रखा। सीढ़ी मिल गई, उस पर मजबूती से खड़ा हो गया। धीरे से और दो सीढ़ियों को पार किया और वहीं रुककर टार्च से रोशनी अंदर फेंकी। जैसा अंदाज था वह तहखाना ही था। लगभग बीस फुट लंबा–चौड़ा। तहखाने की ठंडी हवा से अचानक घेर लिया और काँपने लगा। अंदर का दृश्य देखकर मैं हतप्रभ रह गया। जो कुछ देख रहा हूँ

प्र. 1 लेखक की आँखें चौंधिया जातीं थीं–

जब उसने अस्थिपंजर को देखा।

जब टॉर्च की रोशनी हीरे–जवाहरात पर पड़ती।

जब उसने इतना बड़ा तहखाना देखा ।

जब उसने माला और अँगूठी देखी।

प्र. 2 गद्यांश में किस वारिसपन की बात की गई है?

जमीन की, संपति की, पाप–पुण्य की, खेती–बाड़ी की

प्र. 3 लेखक के पास किस सवाल का जवाब नहीं था?

(1) वह अपनी ज़मीन–जायदाद किसे दे।

(2) ये आभूषण किसके है।

(3) वह अस्थिपंजर किसका था।

(4) वह वारिसपन को यहीं खत्म कर दे या नहीं।

उक्त उदाहरण को पढकर अगर छात्र पूछे गए प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पा रहे हैं, तो इसका अभिप्राय है कि –

- लिखना और पढ़ना सिखाया जाए ।
- छात्रों में रचनात्मकता का अभाव है ।
- छात्रों में तथ्यों के विश्लेषण करने की क्षमता का अभाव है ।
- छात्रों में अभिव्यक्ति क्षमता का अभाव है ।
- छात्रों में तार्किक क्षमता का अभाव है ।

इसके लिए आवश्यक है कि–

- दिए गए अनुच्छेद का बार–बार वाचन कराया जाए ।
- शिक्षक द्वारा आदर्श वाचन एवं छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन को बढ़ावा दिया जाए ।
- नए शब्दों के अर्थ परिचित वाक्यों में से निकालने की कला अभ्यास के माध्यम से सिखाई जाए ।
- सही वर्तनी का ज्ञान करवाएँ एवं उसका प्रयोग करना गतिविधियों के माध्यम से सिखाएँ ।
- कठिन शब्दों के लेखन एवं वाचन पर अधिकाधिक जोर दिया जाए ।
- प्रश्नों को बार–बार पढ़ा जाए और संभावित उत्तरों को रेखांकित करवाएँ ।
- जिन प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट ना हो उनके उत्तर जानने हेतु गद्यांश को पुनः पढ़ाएँ ।
- प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में किंतु मानक रूप में लिखने को कहा जाए ।
- उत्तर संक्षिप्त, सरल भाषा में एवं प्रभावशाली हों ।
- शीर्षक चयन करने वाले प्रश्न हेतु शीर्षक के मूल तत्व को समझें सारांश निकालने का प्रयास बच्चों के द्वारा किया जाए ।
- शीर्षक का चयन करने में यह सावधानी रखने को कहा जाए कि शीर्षक गद्यांश में दी गई सारी अभिव्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाला होना चाहिए ।
- वर्तनी संबंधी त्रुटिओं की अंत में पुनःजाँच की जाए और गलत वर्तनी होने पर शिक्षक द्वारा सही वर्तनी के बारे में छात्रों को बताया जाए ।

संक्षिप्त में शिक्षण संकेत –

(1) शिक्षक गद्यांश/पद्यांश को दो–तीन बार ध्यान से पढ़ने को विद्यार्थियों से कहें।

(2) मूल भावों व विचारों को रेखांकित करने को कहें।

(3) प्रश्नों के उत्तर, मूल गद्यांश में व काव्यांश ढूंढ़ने को कहें।

(4) प्रश्नों का उत्तर सरल, संक्षिप्त, स्पष्ट होना चाहिए इस बात का अभ्यास कराएँ।

(5) छोटे–छोटे वाक्य बनाने का अभ्यास कराएँ।

सामान्यतः 4 तरह के अपठित गद्यांश / अपठित काव्यांश परीक्षा में पूछे जाते हैं जिनके अभ्यास के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जा सकती है:–

(1) किन्हीं भी दो महापुरूषों के रोचक प्रसंग सुनाकर व किन्हीं दो कवियों की रचनाएँ सुनाकर विद्यार्थियों में कर्तव्यबोध की अवधारणा अर्थ समझा दें। महापुरूष– महात्मा गांधी, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, लाल बहादुर शास्त्री, जयशंकर प्रसाद व कबीर आदि।

(2) बच्चों के बीच खेल की चर्चा करते हुए उनकी रूचि के खेलों पर बोलने के लिए कहें। बच्चों से पूछें कि खेलने से क्या–क्या लाभ होते हैं।

उपर्युक्त चर्चा के पश्चात् ही संबंधित अपठित बोध का अभ्यास कराएँ।

विषय से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न

➢ शीर्षक लिखना

छोटी–छोटी कहानियाँ सुनाकर बच्चों से कहानी से मिलने वाली सीख पूछें। इसी 'सीख' से 'शीर्षक' का संबंध जोड़कर समझाएँ तत्पश्चात कुछ छोटे–छोटे प्रसंग सुनाएँ एवं उनका शीर्षक बनवाएँ। कहानी एवं प्रसंगों को बच्चों से दोहराने को कहें।

➢ लघु प्रश्नों का अभ्यास

कहानियों, वृतान्त, प्रसंग से जुड़े हुए प्रश्न करके बच्चों से उत्तर लिखवाएँ।

➢ सारांश

कहानी की मुख्य–मुख्य बातें संक्षेप में लिखवाएँ, तत्पश्चात अपठित गद्यखण्ड / अपठित काव्यांश का लगभग 1/3 भाग मुख्य–मुख्य कथनों को लेकर लिखने का अभ्यास करवाएँ।

➢ स्मरणीय बिन्दु

अपठित गद्य व पद्य खण्ड में सबसे महत्वपूर्ण स्मरणीय बिन्दु है कि शीर्षक 'एक शब्द से लेकर अधिकतम तीन शब्दों तक सीमित रहता है।' प्रायः कमजोर छात्र शीर्षक के उत्तर में वाक्य या अनुच्छेद ही पूरा उतार देते हैं। इसी प्रकार सारांश में सम्पूर्ण अपठित लिख देते हैं। यहाँ उन्हें स्मरण कराना है कि सारांश 1/3 भाग ही होता है।

गतिविधि

(1) सर्वप्रथम शिक्षक कक्षा में घोषणा करें कि 'आज मैं आपको एक कहानी सुनाता/सुनाती हूँ जिसको आपको ध्यान से सुनना है। सुनने के बाद कुछ प्रश्न जो कहानी से सम्बन्धित होंगे उनका उत्तर देना है।

(2) सभी विद्यार्थी अपने पास उत्तरपुस्तिका और कलम रखें जिससे कि कहानी के मुख्य बिन्दुओं को साथ–साथ लिखते चलें।

(3) शिक्षक अपने मन से कोई भी कहानी सुनाएँ। यहाँ ध्यान रखने योग्य बात यह है कि कहानी पाठ्यपुस्तक से न ली जाए।

(4) कहानी सुनाने के बाद कहानी से सम्बन्धित कुछ प्रश्न शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखें और विद्या.

थियों को निर्देश दें कि उन प्रश्नों के उत्तर अपनी – अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

(5) विद्यार्थियों द्वारा उन उत्तरों का मूल्यांकन किया जाए और सुधार हेतु निर्देश देते हुए अच्छे और सही उत्तरों का कक्षा में सस्वर वाचन कराया जाए।

पुनरावृत्ति

शिक्षक द्वारा पढ़ाए गए कालखण्ड में विषयवस्तु से संबंधित मुख्य–मुख्य बातें छोटे–छोटे प्रश्नों के माध्यम से पुनरावृत्ति कर लेना चाहिए हालांकि यह कार्य मूल्यांकन के अंतर्गत् भी संपादित होता है। प्रस्तुत विषय वस्तु से संभावित प्रश्न बनवाकर भी पुनरावृत्ति करवाई जा सकती है।

अभ्यास हेतु निर्देश

- शिक्षक अपठित गद्यांश/पद्यांश का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा नवीन सत्र हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।
- शीर्षक देकर अपठित लिखकर लाने को दें, उसका सारांश एवं लघुउत्तरीय प्रश्न भी तैयार करवाएँ।स्वयं अपठित बनाकर दें अथवा पाठ्यपुस्तक के गद्यपाठों से अनुच्छेद चुनकर उनका शीर्षक, लघुउत्तरीय प्रश्न एवं सारांश लिखकर लाने को कहें। गृहकार्य किसी भी विषयवस्तु को हृदयांगम कराने तथा स्मरणीय बिन्दुओं को स्थायित्व प्रदान करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इकाई 7 – पत्र लेखन

निर्धारित इकाई से 4 अंक का प्रश्न परीक्षा में पूछा जाएगा।

शिक्षण विधि

(1) चर्चा विधि (मौखिक)
(2) लेखन विधि – (प्रारूप विधि)
(3) तालिका विधि
(4) प्रश्नोत्तर विधि

गतिविधि हेतु सामग्री

(1) पोस्टकार्ड – अनौपचारिक पत्र हेतु
(2) अन्तर्देशीय पत्र – अनौपचारिक पत्र हेतु
(3) सफेद लिफाफा – औपचारिक पत्र हेतु
(4) सफेद कागज 1/4 – औपचारिक पत्र हेतु

पत्र लेखन के उद्देश्य

औपचारिक पत्र के उद्देश्य/ प्रार्थना पत्र के उद्देश्य

(1) भाव व विचारों को व्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।
(2) स्वतंत्र लेखन की क्षमता का विकास करना।
(3) पत्र लेखन कला द्वारा समस्या का समाधान करवाना।

अनौपचारिक पत्र के उद्देश्य/व्यक्तिगत पत्र के उद्देश्य

(1) परिवार के सदस्यों एवं मित्रों के प्रति आत्मीयता का भाव जागृत करना।
(2) वर्तमान समय में मोबाईल के अत्यधिक प्रयोग के कारण अनौपचारिक पत्र लेखन विधा लुप्त होती जा रही है इस विधा को प्रोत्साहित करना।

पत्र लेखन

पत्र मुख्य रूप दो प्रकार के होते हैं :–

(1) औपचारिक पत्र/प्रार्थना /आवेदन पत्र
(2) अनौपचारिक पत्र/व्यक्तिगत पत्र

औपचारिक पत्र

वे पत्र जो किसी कार्यालय, संस्था अथवा व्यावसायिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु लिखे जाते हैं, औपचारिक पत्र

कहलाते हैं। जैसे – प्रार्थना – पत्र/आवेदन पत्र

अनौपचारिक पत्र

वे पत्र जो निजी या व्यक्तिगत होते हैं अथवा जिन पत्रों में औपचारिकता का समावेश नहीं होता। वे अनौपचारिक पत्र कहलाते हैं। इन्हें व्यक्तिगत पत्र भी कहते हैं।

जैसे – बधाई–पत्र, आमंत्रण पत्र आदि।

औपचारिक – पत्र /प्रार्थना पत्र

विद्यालय के प्राचार्य को स्थानान्तरण प्रमाण – पत्र प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र

शिक्षण संकेत बिन्दु

1. सर्वप्रथम शिक्षक दिए गए विषय में से निम्न बिन्दुओं पर चर्चा करें –

i. किसको पत्र लिखा जा रहा है?
ii. क्यों लिखा जा रहा है?
iii. कारण सम्बंधी विषय – वस्तु (किस कारण लिखा जा रहा है?
iv. कौन लिख रहा है?
v. कब लिखा जा रहा है?

उदाहरण –

प्रति,

किसको
पदनाम
पता

विषय : क्यों

कारण संबंधी विषय–वस्तु
(किस कारण पत्र लिखा जा रहा है उसका विवरण)

कब (दिनांक)

किसने

2. अगले चरण में शिक्षक कुछ ऐसे शब्द एवं वाक्य प्रारूप में लिखकर दें जो औपचारिक पत्रों (आवेदन – पत्र) में हमेशा उपयोग में लाए जा सकते हैं।

प्रति,

विषय	:	

विनम्र निवेदन है कि ——।

अतः निवेदन है कि मुझे ——————————— प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद

प्रार्थी

गतिविधि

(1) पत्र प्रारूप में रिक्त स्थान में कौन से वाक्य आएँगे इसका अभ्यास अलग – अलग विषय देकर छात्रों से करवाना चाहिए।

विषय वस्तु

➢ अनौपचारिक/व्यक्तिगत पत्र

बड़े भाई को गर्मी की छुट्टियों का वर्णन करते हुए पत्र

शिक्षण संकेत बिन्दु

1. सर्वप्रथम शिक्षक दिए गए विषय पर निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा करें–

i. जो पत्र लिख रहा है उसका पता

ii. सम्बोधन

iii. विषय – वस्तु

iv. जिसे पत्र भेजा जा रहा है उसका पता

v. किसने लिखा ?

@ASK_Classes

अनौपचारिक – पत्र का प्रारूप

भेजने वाले का पता

दिनांक – ....

सम्बोधन एवं अभिवादन

विषय – वस्तु

लिफाफे के लिए पता
(प्राप्त करने वाले का पता)

किसने

पत्र लेखन (कुल अंक 4) अंक विभाजन

(1) औपचारिक पत्र/प्रार्थना पत्र हेतु अंक विभाजन

प्रति,

.... (संबोधन पर 1 अंक)

विषय – (सही विषय लिखने पर 1 अंक)

विनम्र ——

——

——

————————————————(विषय वस्तु को स्पष्ट करने पर 1 अंक)————————

धन्यवाद

दिनांक

प्रार्थी (1 अंक)

————————

नोट– प्रार्थी, पत्र के बाईं ओर भी लिखा जाना वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मान्य है। अतः बाईं अथवा दाईं ओर में से किसी एक ओर प्रार्थी लिखा जाना सही होगा।

उपर्युक्त प्रारूप को बोर्ड पर लिखें तथा विद्यार्थियों को बताएँ कि क्या लिखने पर कितने अंक प्राप्त होते हैं –

यदि आपने संबोधन सही लिखा है तो 1 अंक, विषय जो कि प्रश्न में ही दिया होता है उसे लिखने पर 1 अंक, समापन पर अर्थात प्रार्थी एवं नाम लिखने पर 1 अंक तथा विषयवस्तु लिखने पर 1 अंक मिलते हैं।

अनौपचारिक (व्यक्तिगत पत्र हेतु)

पत्र–लेखन कुल अंक–4

(2) अनौपचारिक पत्र (व्यक्तिगत पत्र) हेतु अंक विभाजन

संबोधन – 1 अंक

पूज्यनीय/आदरणीय — प्रेषक का पता

बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द — दिनांक सहित

प्रिय/अनुज — 1 अंक

बराबर व छोटों के लिए शब्द

अभिवादन

सम्पूर्ण विषय–वस्तु लिखने पर (1 अंक)

_____

_____

_____

प्रेषक का नाम (1 अंक)

➢ सामान्यतः होने वाली गलतियाँ

(1) सम्बोधन में – जैसे–प्राचार्य के स्थान पर (महिला प्राचार्य होने पर) प्राचार्या लिख देना। अतः हमेशा प्राचार्य ही आना चाहिए चाहे महिला हो या पुरूष। क्योंकि पद कभी भी स्त्रीलिंग में नहीं परिवर्तित होता।

(2) अल्प – विराम, पूर्ण विराम न लगाना।

(3) कृपा और कृपया शब्द में भेद न कर पाना।

(4) वर्तनी सम्बंधी अशुद्धियाँ – प्रार्थी, प्रति, प्राचार्य, चरण – स्पर्श आज्ञाकारी।

(5) अव्यवस्थित प्रारूप

➢ होने वाली गलतियों का समाधान–

(1) निदानात्मक कक्षा हेतु तैयार किए गए मॉड्यूल की सम्पूर्ण विषय वस्तु का शिक्षक बार–बार अध्यापन एवं अभ्यास कराएँ।

(2) निर्धारित प्रारूप में अलग – अलग विषय के औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्रों का अध्यापन एवं आदर्श पत्र – लेखन शिक्षक द्वारा स्वयं किया जाए।

अभ्यास हेतु निर्देश

शिक्षक औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्रों का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा नवीन सत्र हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।

इकाई 8–अनुच्छेद लेखन/संवाद लेखन/ विज्ञापन लेखन, निबन्ध लेखन (रूपरेखा सहित)

निर्धारित इकाई से 7 अंक के प्रश्न परीक्षा में पूछे जाएँगे।

प्रस्तावना

सम्बन्धित विषय को आस–पास की चीजों से जोड़कर निदानात्मक कक्षा में अध्यापन कार्य कराया जाए।

गतिविधि – 1

शिक्षक सर्वप्रथम अपने आस–पास की विषयवस्तु पर कुछ वाक्य लिखकर निबन्ध लेखन हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करें। प्रश्न बैंक में दिए गए विषयों पर निबन्ध लेखन का अभ्यास कक्षा में ही कराया जाए। इसके अतिरिक्त अन्य समसामयिक विषयों पर निबन्ध लेखन का अभ्यास शिक्षक अपनी निगरानी में करवाएँ। निदानात्मक कक्षाओं हेतु बनाए गए इस मॉडयूल में कुछ बिन्दुओं पर चर्चा की गई है एवं कुछ विषयों पर निबन्ध की रूपरेखा दी गई है जिसका प्रयोग निदानात्मक कक्षा हेतु शिक्षक द्वारा किया जाना विद्यार्थियों को लाभान्वित करेगा।

निबन्ध क्या है ?

किसी विषय पर स्वयं के भावों तथा विचारों को व्यवस्थित रूप से व्यक्त करना ही निबन्ध लेखन है।निबन्ध लिखते समय इस बात पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना चाहिए कि आपके विचार एक निश्चित क्रम में हों। इसके अभाव में निबन्ध सुसम्बद्ध नहीं रह पाता। निबन्ध में व्यक्त किए गए भाव एवं विचार स्पष्ट होने चाहिए।

निबन्ध लेखन के भाग या चरण

अंक विभाजन

प्रस्तावना	–	निबन्ध का प्रारम्भ	01 अंक
मध्यभाग	–	विस्तार या विषय विवरण	02 अंक
उपसंहार	–	निबन्ध का अंत	01 अंक

निबन्ध रचना विषयक महत्त्वपूर्ण बातें

(1) विद्यार्थियों को बताएँ कि वे रटकर न लिखें, समझकर अपने शब्दों में लिखें।

(2) जिस विषय पर निबन्ध लेखन करना हो उस पर चिन्तन करके ही लेखनी चलानी चाहिए।

(3) निबन्ध की प्रस्तावना तथा उपसंहार प्रभावोत्पादक होना चाहिए।

(4) निबन्ध में विषयानुरूप यत्र–तत्र कविता, सूक्ति तथा विद्वानों के उद्धरण प्रस्तुत करना चाहिए।

(5) विचार क्रमबद्ध होने चाहिए।

(6) भाषा–शैली आकर्षक व यथा संभवसुन्दर लेख होना चाहिए।

(7) विरामचिह्नों का उचित प्रयोग एवं वर्तनी शुद्ध होनी चाहिए।

भाग– ब में अनुच्छेद लेखन /संवाद लेखन /विज्ञापन लेखन हैं।

गतिविधि–2

(1) विद्यार्थियों को चार समूह में विभाजित कर प्रत्येक को 10–10 मिनिट का समय दें जिसमें प्रत्येक समूह को एक–एक विषय निबन्ध या अनुच्छेद लेखन के लिए दें।

(2) अगले चरण में चारों समूह अपनी–अपनी निबन्ध की रूपरेखा को सभी के समक्ष वाचन करेंगे।

(3) इसके बाद एक समूह दूसरे समूह से और तीसरा समूह चौथे समूह से अपना–अपना निबन्ध या अनुच्छेद सुनेंगे।

(4) शिक्षक समस्त गतिविधि का अवलोकन करते हुए मार्गदर्शन करें।

(5) प्रत्येक समूह का हर विद्यार्थी अपनी–अपनी उत्तरपुस्तिका में बिना देखे निबन्ध/अनुच्छेद लिखें और शिक्षक मूल्यांकन करें।

(6) अंत में शिक्षक सबसे शुद्ध वर्तनी एवं विषयवस्तु के आधार पर सर्वश्रेष्ठ निबन्ध/अनुच्छेद का चयन कर पुरस्कृत करें एवं प्रोत्साहन प्रदान करें।

संवाद लेखन

संवाद लेखन हेतु शिक्षक विभिन्न छोटे–छोटे पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा नैतिक विषयों पर कक्षा में चर्चा विधि का प्रयोग करें तथा उसी चर्चा का छात्रों में संवाद के रुप में परिवर्तित करने के गुणों का विकास करें।

विज्ञापन लेखन

शिक्षक समाचार–पत्र और टी. वी. में आने वाले विज्ञापनों के बारे में रोचक ढंग से चर्चा कर छोटे–छोटे विज्ञापन बनाकर लाने को विद्यार्थियों को कहें।

अभ्यास हेतु निर्देश

शिक्षक निबन्ध / अनुच्छेद / संवाद लेखन / विज्ञापन लेखन का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा नवीन सत्र हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।

इकाई 3 गद्य खण्ड

निर्धारित इकाई से 17 अंक के प्रश्न परीक्षा में पूछे जाएँगे।

शिक्षण संकेत

(1) शिक्षक विषय के (इकाई क्रमांक 2) के महत्वपूर्ण अंशों की सरल गतिविधियों के माध्यम से समझाने का प्रयास करें।

(2) शिक्षक बीच–बीच में छात्रों का मूल्यांकन करते रहे जिससे छात्रों की स्थिति से अवगत हो सकें।

(3) इन गतिविधियों के अलावा शिक्षक अपनी स्वयं की गतिविधियों को भी शामिल कर सकते हैं।

गद्य खण्ड की विविध विधाएँ–

- गौण व प्रमुख विधाएँ
- लेखक परिचय –
- गद्य पाठों की व्याख्या
- गद्य आधारित विचार बोध एवं विषय बोध पर प्रश्न

इस ब्लूप्रिन्ट से छात्रों को अवगत अवश्य कराएँ जिससे उन्हें अध्ययन करते समय इसकी जानकारी हो जाए कि हमें परीक्षा के लिए तैयारी कैसे करनी है, कौन–सी इकाइयाँ पढ़नी हैं। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में विकल्प का प्रावधान रखा गया है।

गद्य की विविध विधाएँ

सहायक सामग्री – जयशंकर प्रसाद, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचन्द, महादेवी वर्मा, व महात्मा गाँधी के चित्र।

नोट – शिक्षक अपने अनुसार सहायक सामग्री का उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तावना – प्राचीन काल में मुद्रण कला का अभाव था। अतः सभी रचनाएँ पद्य में ही की जाती थीं। चूँकि हर व्यक्ति पद्य की रचना नहीं कर सकता था, इस कारण कई प्रतिभाएँ अपने विचारों को लिपिबद्ध नहीं कर पाती थीं। आधुनिक काल में गद्य साहित्य का विकास हुआ। गद्य साहित्य अनेक रूपों में उपलब्ध है। ये रूप गद्य की विधाएँ कहलाती हैं, जो निम्नानुसार है –निबन्ध, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, जीवनी, आत्मकथा आदि। इन सभी को दो वर्गों में विभाजित किया गया है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न– प्राचीन काल में किस कला का अभाव था?

उत्तर– प्राचीन काल में मुद्रण कला का अभाव था।

प्रश्न–आधुनिक काल में किस साहित्य का विकास हुआ?

उत्तर– आधुनिक काल में गद्य साहित्य का विकास हुआ है।

प्रश्न–गद्य साहित्य के अनेक रूप क्या कहलाए?

उत्तर–गद्य साहित्य के अनेक रूप गद्य की विधाएँ कहलाए।

(छोटे–छोटे प्रश्न पूछकर हम छात्रों का मूल्यांकन भी कर सकते हैं।)

इससे छात्रों में रोचकता व सजगता बनी रहती है।

गद्य की विधाओं को दो वर्गों में विभाजित किया गया है। पाठ्यक्रमानुसार विधाओं का वर्गीकरण इस प्रकार है–

मुख्य विधाएँ	गौण विधाएँ
निबन्ध	जीवनी
कहानी	आत्मकथा
उपन्यास	संस्मरण
नाटक	रेखाचित्र
एकांकी	पत्र
आलोचना	डायरी, रिपोर्ताज, साक्षात्कार

इन सभी विधाओं के सामान्य परिचय से छात्र प्रश्नोत्तर लिख सकेंगे जिससे वे परीक्षा में अंक प्राप्त कर सकें।

निबन्ध विधा

निबन्ध विधा का परिचय हम प्रश्नोत्तर विधि से दे सकते हैं।

प्रश्न–1 निबन्ध की परिभाषा, प्रकार व दो निबन्धकारों के नाम रचना सहित लिखिए।

उत्तर–2 परिभाषा – निबन्ध वह रचना है जिसमें लेखक किसी भी विषय पर स्वच्छंदतापूर्वक अपने विचारों,भावों और अनुभवों को सजीवता व स्वाभाविकता के साथ व्यक्त करता है।

निबन्ध के प्रकार–

निबन्ध सामान्यतः चार प्रकार के होते हैं –

(1) कथात्मक (2) वर्णनात्मक (3) विचारात्मक (4) भावात्मक

दो प्रमुख निबन्धकारों के नाम व प्रमुख रचना

(1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – 'कवि वचन सुधा'

(2) प्रतापनारायण मिश्र – 'ब्राह्मण'

प्रश्न–2 नाटक, कहानी उपन्यास व एकांकी के तत्वों को लिखिए।

उत्तर– इन चारों प्रश्नों के उत्तर निम्न सूत्र द्वारा दिया जा सकता है–

सूत्र – कपास दे भाउ

क – कथानक

पा – पात्र परिचय

स – संवाद (कथोपकथन)

दे – देशकाल व वातावरण

भा – भाषाशैली

उ – उददेश्य

अभिनय तत्व एकांकी व नाटक के लिए होता है, क्योंकि इसका रंगमंच पर मंचन होता है। इस सूत्र को छात्रों को अवश्य याद करा सकते हैं। सूत्र से छात्र चार प्रश्नों के उत्तर लिख सकता है।

गद्य की विधाएँ

कहानी एवं उपन्यास में कोई चार अंतर

क्र.	कहानी	उपन्यास
1.	कहानी की कथावस्तु संक्षिप्त होती है।	उपन्यास की कथावस्तु विस्तृत होती है।
2.	कहानी में एक घटना का वर्णन होता है।	उपन्यास में अनेक घटनाओं का वर्णन होता है।
3.	कहानी में कम पात्र होते हैं।	उपन्यास में अधिक पात्र होते हैं।
4.	'परीक्षा' प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी है।	'गोदान' प्रेमचन्द द्वारा लिखित उपन्यास है।

एकांकी एवं नाटक में अंतर

क्र.	एकांकी	नाटक
1.	एकांकी में एक ही अंक होता है।	नाटक में अनेक अंक होते हैं।
2.	एकांकी की कथावस्तु संक्षिप्त होती है।	नाटक की कथावस्तु विस्तृत होती है।
3.	एकांकी में पात्रों की संख्या कम होती है।	नाटक में पात्रों की संख्या अधिक होती है।
4.	'दीपदान' रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित एकांकी हैं।	'चन्द्रगुप्त' जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित नाटक है।

जीवनी और आत्मकथा में अंतर

क्र.	जीवनी	आत्मकथा
1.	जीवनी किसी महापुरूष के जीवन पर लिखी जाती है।	आत्मकथा स्वयं के जीवन पर लिखी जाती है।

2.	जीवनी सत्य घटनाओं पर आधारित होती है।	आत्मकथा काल्पनिक भी हो सकती है।
3.	जीवनी में लेखक तटस्थ होता है।	आत्मकथा में लेखक की वैयक्तिकता झलक जाती है।
4.	जीवनी प्रेरणादायक होती है।	आत्मकथा से प्रेरणा प्राप्त हो, यह आवश्यक नहीं है।

गतिविधि

विभिन्न विधाओं को अपने स्वरूप के अनुसार गतिविधि कर समझाया जाए। जैसे–

- कहानी को कहकर एवं सुनकर विद्यार्थियों को बताना।
- एकांकी को विभिन्न पात्र बनाकर कक्षा में अभिनय करवाया जाए।
- आत्मकथा किसी विद्यार्थी के माध्यम से सुनकर अन्य विद्यार्थियों को समझाई जा सकती है।

अभ्यास हेतु निर्देश

शिक्षक गद्य की विधाओं पर आधारित अन्य प्रश्नों का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा नवीन सत्र हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।

लेखक परिचय

जिससे छात्र परीक्षा में लेखक परिचय आसानी से लिख सकें व अंक प्राप्त कर सकें।

सहायक सामग्री

शिक्षक द्वारा–कुछ जीवनी व आत्मकथा लिखी हुई, लेखकों के चित्र, लेखक परिचय का लिखा हुआ प्रारूप चार्ट बनाकर लाया जा सकता है। प्रायः देखा जाता है कि शिक्षक द्वारा लेखक परिचय व कवि परिचय की चर्चा करने पर छात्र उत्तर देते समय भ्रमित हो जाते हैं। इस प्रकार की त्रुटियों को दूर करने के लिए लेखक परिचय की अवधारणा को छात्रों के समक्ष स्पष्ट करना चाहिए। जिससे वे लेखक परिचय लिखते समय भ्रमित न हों।

शिक्षण संकेत

लेखक परिचय पढ़ाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है –

(1) लेखक की रचनाओं को सर्वप्रथम अच्छी तरह से याद करवाना जिससे उन्हें 1 अंक की प्राप्ति हो।

(2) भाषा और शैली दो अलग–अलग शब्द हैं। अतः एक ही बिन्दु के अंतर्गत् लिखते समय इसे पैराग्राफ द्वारा अलग–अलग व्यवस्थित किया जाना चाहिए। भाषा (पैराग्राफ) अनुच्छेद लिखते समय छात्रों को बताया जाए कि लेखक ने किस भाषा का प्रयोग किया है। कुछ अपनी रचनाओं में उर्दू, अरबी, अथवा फारसी भाषा का प्रभाव रहता है।

(3) शैली के अन्तर्गत् छात्रों को शैली का अर्थ समझाना चाहिए। शैली का सामान्य अर्थ है लिखने का ढंग तरीका या परिपाटी। शैली कई प्रकार की होती है। कक्षा 9वी व 10वीं के छात्रों के लिए मुख्य रूप से 5 या 6 शैली का ही प्रयोग किया जाता है। ये छात्रों के लिए भी सरल हैं।

शैलियों के प्रकार

भावात्मक शैली, विवरणात्मक, विचारात्मक कथात्मक शैली, इन शैलियों को याद अवश्य कराया जाए।

प्रारूप

➢ लेखक परिचय

- रचनाएँ– कोई दो
- भाषा – सहज, सरल, प्रवाहमयी, चंचलता शब्द–तत्सम, तद्भव, देशज या विदेशी मुहावरे व लोकोक्ति भाषा – आधुनिक खड़ी बोली, संस्कृत निष्ठ, व्याकरण सम्मत
- शैली – सभी प्रकार की लिख सकते हैं।
- साहित्य में स्थान– लेखक का साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान

गतिविधि क्रमांक–1

सर्वप्रथम विद्यार्थियों को विषयसूची या अनुक्रमणिका (गद्य पाठ की) याद करवाई जाए। इससे छात्रों को लेखक की रचना याद हो जाएगी। इसके साथ ही तीन–तीन और रचना व रचनाकारों का चार्ट बनवाकर कक्षा में भी लगवा सकते हैं।

गतिविधि क्रमांक–2

तालिका संबंधी शिक्षण संकेत :– शिक्षक नीचे दी गई तालिका को छात्रों को समझाकर याद करवाएँ एवं उसकी समय–समय पर पुनरावृत्ति करवाएँ। इसके माध्यम से छात्र कवि परिचय संबंधी एक अंकीय व दो अंकीय प्रश्नों को हल करने में सक्षम हो सकेंगे। लेखक परिचय संबंधी प्रश्न लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा नवीन सत्र हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक में दिए गए हैं। शिक्षक उन प्रश्नों का अभ्यास करवाएँ।

लेखक परिचय तालिका

लेखक परिचय : एक दृष्टि

क्र.	लेखक का नाम, जन्म, मृत्यु एवं दो रचनाएँ	विशेषताएँ		साहित्य में स्थान
		भाषागत	शैलीगत	
1	**स्वयं प्रकाश** जन्म–सन् 1947 रचनाएँ–'संधान', 'बीच में विनय',	• लोक प्रचलित व्यावहारिक भाषा • आडम्बर से दूर भाषा • सरल सहज, सुस्पष्ट भाषा	• शैली प्रभावपूर्ण रोचक • शोषण पर कटाक्ष (तीखा व्यंग्य) • वर्णनात्मक शैली • खड़ी बोली व तत्सम तद्भव भाषा	साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान

2	**रामवृक्ष बेनीपुरी** जन्म–सन् 1899 मृत्यु–सन् 1968 रचनाएँ–'अंबपाली', 'माटी की मूरतें '	• भाषा व्यावहारिक है • सरलता, सुबोधता और सजीवता • मुहावरों और कहावतों की भाषा	• रेखाचित्र शैली का प्रयोग • ग्रामीण संस्कृति का प्रयोग • शैली सरल, सहज व चित्रात्मक है	उन्हें कलम का जादूगर कहा गया है।
3	**यशपाल** जन्म –1903 रचनाएँ–पिंजड़े की उड़ान, अमिता, दिव्या, मेरी तेरी उसकी बात, लखनवी अंदाज	• भाषा प्रवाहमयी व स्वाभाविकता • तत्सम, तद्भव विदेशी भाषा • मुहावरे, लोकोक्ति का सटीक प्रयोग • चमत्कार तथा प्रभावशीलता युक्त भाषा	• सरल, सहज व प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग • तत्सम शब्द, विदेशी, देशज शब्द का प्रयोग	सामाजिक यथार्थ का चित्रण एवं हिन्दी के कथा साहित्य में विशेष योगदान है।
4	**मन्नू भंडारी** जन्म–सन् 1931 मृत्यु–सन् 2021 रचनाएँ–'मैं हार गई', 'यही सच है'	• बोलचाल व व्यावहारिक भाषा • तत्सम, तदभव् देशज तथा विदेशी शब्दों का प्रयोग • लोकोक्ति व मुहावरों का स्वाभाविक का प्रयोग • भाषा में सम्प्रेषण की अद्भुत क्षमता।	• भावात्मक स्थलों पर भावात्मक शैली • वर्णनात्मक शैली का प्रयोग • संवाद शैली से कहानियों में सजीवता का प्रयोग • स्वाभाविक विषमताओं, नारी शोषण पर तीखे व्यंग्य हेतु व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग	आधुनिक कथा साहित्य में मन्नू भण्डारी का प्रतिष्ठित स्थान है।

गतिविधि क्रमांक – 3

➢ रचनाएँ

प्रत्येक लेखक की रचनाएँ याद करवाई जाएँ और छात्रों को यह बताया जाए कि प्रत्येक लेखक का पूरा परिचय यदि याद न हो तो भाषा, शैली एवं साहित्य में स्थान के अंतर्गत् निम्नलिखित बिन्दुओं का प्रयोग किया जा सकता है–

➢ भाषा

आपकी रचनाओं में खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग किया गया है। भाषा सहज, सरल एवं बोधगम्य है। भाषा में प्रभावशीलता है। तत्सम, तद्भव, देशी व विदेशी शब्दों का यथासम्भव प्रयोग हुआ है।

➢ शैली

आपकी रचनाओं में मुख्यतः विचारात्मक, विवरणात्मक आलोचनात्मक शैलियों का प्रयोग किया है एवं मुहावरों और कहावतों का यथास्थान प्रयोग किया गया है।

➢ साहित्य में स्थान

आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं।

गद्य की व्याख्याः–

➢ भूमिका :–

सर्वप्रथम जानें कि गद्य क्या है? अपने विचारों को क्रमबद्ध ढंग से संप्रेषण की विधा को गद्य कहते हैं। पद्य एवं गद्य में महत्वपूर्ण अंतर यही है कि गद्य विचार प्रधान विधा है वह मस्तिष्क को प्रभावित करती है तथा पद्य भाव प्रधान विधा होकर हृदय को प्रभावित करती है। अतः गद्यांश की व्याख्या करते समय शिक्षक को कुछ बिन्दुओं का ध्यान रखना होगा।

शिक्षक कथन – कुछ स्मरणीय महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- गद्य विचार प्रधान होता है।
- गद्य विद्या में भी वाचन के समय स्वर के उतार चढ़ाव का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- सहायक सामग्री का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।
- विरामचिह्नों के अनुसार आदर्श वाचन कर अनुकरण वाचन करवाना चाहिए।

गतिविधि

लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा जारी प्रश्न बैंक में दिए गए गद्यांशों में से किसी भी एक गद्यांश की व्याख्या शिक्षक सन्दर्भ, प्रसंग व विशेष लिखकर छात्रों को समझाएँ, जिससे वे अन्य गद्यांशों की व्याख्या कर सकें।

विषय वस्तु एवं विचार बोध पर आधारित प्रश्न

शिक्षण गतिविधि

शिक्षक पूर्व के पाठों से प्रश्नों को स्वयं तैयार करके कक्षा में ले जाएँ। पाठ के प्रमुख अनुच्छेदों में से प्रश्न तैयार कर प्रश्न लिखवा सकते हैं। इसके अलावा प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्यान विधि, चर्चा विधि एवं संवाद विधि का प्रयोग प्रश्नों को तैयार करवाने हेतु किया जाए।

इकाई – 1 काव्य खण्ड

निर्धारित इकाई से 17 अंक के प्रश्न परीक्षा में पूछे जाएँगे।

शिक्षण संकेत

(1) शिक्षक छात्रों को विषय के महत्त्वपूर्ण अंशों को सरल गतिविधियों के माध्यम से समझाएँ।

(2) निदानात्मक कक्षाओं में अध्ययन कराते समय पाठ्यक्रमानुसार (टी.एल.एम.) का प्रयोग अवश्य करें।

(3) शिक्षक बीच–बीच में छात्रों का मूल्यांकन करते रहें।

(4) यह इकाई काफी बड़ी है। निदानात्मक कक्षाओं हेतु महत्वपूर्ण अंशों को लिया गया है, जिससे छात्र लाभान्वित हो सकें। प्रश्नों के उत्तर शब्द सीमा में देना है। 2 अंक के लिए लगभग 30 शब्द, 4 अंक के लिए लगभग 120 शब्द हैं।

काव्य खण्ड –

पद्य साहित्य का विकास

➢ **सहायक सामग्री**

कुछ रचनाकारों एवं रचना के चित्र व पुस्तकें।

रचनाओं के चित्र दिखाकर व कुछ रचना के बारे में छात्रों से पूछने पर उत्तर आ सकता है कि यह पुराने कवियों के चित्र हैं। हो सकता है कि कुछ छात्र बता पाएँगे, कि प्राचीन भाषा उतनी परिमार्जित नहीं थी जितनी कि वर्तमान में आधुनिक हिन्दी खड़ी बोली हो गई है। तब छात्रों को बताया जाए कि भाषा का आधुनिक रूप किन–किन परिस्थितियों एवं पड़ावों से गुजरा है। इसी अध्ययन का नाम इतिहास है।

आइए जानें–

हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार भागों में विभाजित किया गया है–

आ. रामचंद्र शुक्ल के अनुसार संवत् में

वीरगाथा काल (आदिकाल)	संवत् 1050 से संवत् 1375 तक
भक्तिकाल (पूर्व मध्यकाल)	संवत् 1375 से संवत् 1700 तक
रीतिकाल (उत्तर मध्य काल)	संवत् 1700 से संवत् 1900 तक
आधुनिक काल	संवत् 1900 से अब तक

रीतिकाल का संक्षिप्त परिचय

इसे रीतिकाल अथवा श्रृंगार काल या कला काल के नाम से पुकारा जाता है। रीति काल में तीन प्रकार की रचनाएँ हुई

(1) रीतिसिद्ध, (2) रीतिबद्ध (3) रीतिमुक्त ।

रीतिकालीन प्रमुख कवि और रचनाएँ

➢ केशवदास

प्रमुख रचनाएँ– कवि प्रिया, रामचन्द्रिका, रसिक प्रिया, रतन बावनी, विज्ञान गीता आदि।

➢ बिहारी

प्रमुख रचनाएँ– बिहारी सतसई

➢ घनानन्द

प्रमुख रचनाएँ– सुजानहितप्रबंध, कृपाकंदनिबंध, विरहबेलि, इश्कलता, यमुनायश, प्रेमपत्रिका आदि।

आधुनिक काल का संक्षिप्त परिचय

➢ प्रगतिवाद

छायावाद के उपरान्त प्रगतिवादी नवीन विचारधारा का जन्म हुआ। प्रगतिवादी कवि कॉर्ल मार्क्स से प्रभावित थे। अतः इन्होंने **'कला को कला के लिए'** न मानकर **'कला जीवन के लिए'** का सिद्धान्त अपनाया। प्रगतिवादी युग का समय 1936 से 1942 तक माना गया है।

प्रमुख कवि–सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', रामधारी सिंह 'दिनकर', निराला, दिनकर, शिवमंगल सिंह 'सुमन' और भगवतीचरण वर्मा, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल आदि हैं।

➢ प्रयोगवाद

प्रगतिवाद के उपरान्त सन् 1943 ई. में अज्ञेय के 'तार सप्तक' के प्रकाशन के उपरान्त प्रयोगवाद नाम की नई काव्य धारा का जन्म हुआ।

प्रमुख कवि– अज्ञेय, धर्मवीर भारती।

➢ नई कविता

इन कवियों ने नये प्रतीकों, नये उपमानों एवं नये बिम्बों का प्रयोग कर काव्य परम्परा की पुरानी रीतियों से पृथक रचना की, लेकिन इस युग की कविता न होकर अकविता हो गयी है। सन् 1950 के बाद नई कविता का शुभारम्भ हुआ। यह कविता किसी वाद या परम्परा में बँधकर नहीं चली। इस कविता में अति यथार्थतापूर्ण वर्णन है लेकिन इस कविता से निराशा ही मिली है।

प्रमुख कवि– भवानी प्रसाद मिश्र, गिरिजाकुमार माथुर, जगदीश गुप्त ।

इस तालिका का अभ्यास छात्रों को अधिक से अधिक करवाया जा सकता है।

कक्षा में चार्ट बनाकर लगा सकते हैं। इससे छात्र भक्तिकाल को अच्छी तरह से जान लेंगे व याद कर लेंगे तथा परीक्षा में आए प्रश्नों के उत्तर सरलता से लिख सकेंगे।

गतिविधि

शिक्षक यह गतिविधि छात्रों द्वारा करवा सकते हैं। एक छात्र रीतिकाल का परिचय दे कि मैं रीति काल हूँ। मेरी 3 शाखाएँ हैं। जिनके नाम रीतिसिद्ध, रीतिबद्ध और रीतिमुक्त हैं। 3 अन्य छात्र ये 3 धाराएँ बनकर आएँगे और अपना अपना परिचय देंगे। वे अपनी धारा व अपने प्रमुख कवि व रचना का नाम, कुछ विशे ाताओं के बारे में भी बता सकते हैं। इस प्रकार छोटी सी **अभिनय विधा** के द्वारा रीतिकाल नाटिका का मंचन कक्षा में करवाया जा सकता है। अन्त में मीरा के पद का गायन करें।

गतिविधि

कक्षा में छात्रों से सस्वर कविता वाचन प्रतियोगिता भी करवा सकते हैं।

- कबीर के दोहों का गायन व संकलन भी किया जा सकता है।
- वर्तमान समय में शिक्षक अपने पास मोबाईल से स्वर लय युक्त रीतिकाल गीत का अभ्यास छात्रों को करवा सकते हैं।
- कवियों के चित्र भी बनाकर कक्षा में लगवा सकते हैं। गूगल सर्च इंजिन में कवियों के नाम लिखकर चित्र प्राप्त कर सकते हैं, इसे अपनी कक्षा में लगा सकते हैं।
- वीरता हेतु देश भक्ति गीतों की प्रतियोगिता भी करवा सकते हैं। 26 जनवरी व 15 अगस्त पर वीरों की कहानियाँ भी सुना सकते हैं।

अभ्यास के प्रश्नों को गृहकार्य में दे सकते हैं।

➢ मूल्यांकन

प्रश्नों का लिखित व मौखिक मूल्यांकन करके, शिक्षक जिन प्रश्नों को छात्र हल नहीं कर पाएँ, उन्हें पुनः याद करवाने का प्रयत्न करें।

कवि परिचय

➢ कलापक्ष

(1) कलापक्ष में कवि द्वारा प्रयुक्त छन्द, अलंकार, गुण के बारे लिखा जाता है।

अभ्यास हेतु निर्देश

शिक्षक पद्य साहित्य के इतिहास संबंधी प्रश्नों का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।

शिक्षण संकेत

(1) प्रमुख कवि व उनकी रचनाओं (दो–दो) को याद करवाएँ।

(2) भावपक्ष में निहित बिन्दु जैसे – रस की प्रधानता, कवि द्वारा भावनायें, विचारों, भाषा शैली भी आदि भी इसमें लिख सकते हैं।

(3) भावपक्ष में कवि ने पाठ्यक्रम में जो कविता लिखी है। उस पाठ के प्रश्नों के उत्तर भी लिख सकते हैं।

(2) कवि द्वारा प्रयुक्त काव्य शिल्प या सौन्दर्य भी कलापक्ष में निहित होता है।

➢ **साहित्य में स्थान–**

सभी कवि हमारे लिए सम्माननीय हैं। अतः सभी का स्थान सर्वोपरि है।

➢ **अभ्यास के प्रश्नः–**

शिक्षक छात्रों से मौखिक प्रश्न अवश्य करें।

प्रश्न.1 भावपक्ष में किसकी प्रधानता रहती है ?

उत्तर भावपक्ष में रस की प्रधानता रहती है।

प्रश्न.2 भावपक्ष में निहित बिन्दु कौन–कौन से होते हैं ?

उत्तर कवि के विचार कवि की भावनाएँ, कवि द्वारा प्रयुक्त भाषा शैली।

प्रश्न.3 भावपक्ष में पाठ से हम क्या लिख सकते हैं ?

उत्तर भावपक्ष में पाठ से प्रश्नों के उत्तर लिख सकते हैं।

प्रश्न.4 कलापक्ष में किन बिन्दुओं को लिखा जा सकता है ?

उत्तर कलापक्ष में कवि द्वारा प्रयुक्त छन्द, अलंकार, गुण के बारे में लिखा जाता है।

प्रश्न.5 साहित्य में स्थान से क्या आशय है ?

उत्तर सभी कवि हमारे लिए आदरणीय है। अतः सभी का स्थान साहित्य जगत में सर्वोपरि है।

कवि परिचय का प्रारूप निम्नानुसार है।

दो रचनाएँ

➢ **भावपक्ष**

विशेषः– *इन प्रश्नों को कक्षा कार्य की उत्तर पुस्तिका में छात्रों को अवश्य लिखवाएँ व याद करवाएँ। इन प्रश्नों के उत्तर से वे कवि परिचय लिखने में भ्रमित नहीं होंगे।*

प्रारूप को लिखने का अभ्यास छात्रों से अवश्य करवाएँ।

(भावनात्मक बोध की अभिव्यक्ति व रस पक्ष)

➢ **कला पक्ष**

(कला रचना, भाषा शैली छन्द, अलंकार व व्याकरण पक्ष)

➢ **साहित्य में स्थान**

कवि परिचय की गतिविधि

गतिविधि क्रमांक – 1

(1) दो रचनाएँ

(2) भावपक्ष

(3) कलापक्ष

(4) साहित्य में स्थान

इन चारों बिन्दुओं को कक्षा के चार समूह में विभाजित करके प्रत्येक समूह को एक–एक बाँट दिए जाएँ। चारों समूहों में से एक–एक छात्र को दिए गए बिन्दुओं को क्रमवार खड़े करके, देखकर सुनाने के लिए कहें। इस प्रकार कवि का साहित्यिक परिचय छात्रों को याद करने में सरलता होगी।

इनका अभ्यास छात्रों को अवश्य करवाएँ जिससे छात्र कवि परिचय लिख सकें।

उदाहरण के रूप में यहाँ तुलसीदास जी का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत है–

तुलसीदास

➢ रचनाएँ

'रामचरितमानस', 'कवितावली', 'दोहावली', 'जानकी मंगल', 'पार्वती मंगल' आदि।

➢ भावपक्ष–

भक्त शिरोमणि तुलसीदास उच्च कोटि के कवि थे। राम के मंगलकारी रूप को समाज के सामने प्रस्तुत कर समाज को दिशा प्रदान करने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका है। रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि तुलसीदास का सम्पूर्ण काव्य राम की भक्ति भावना से ओत–प्रोत है। शैव, वैष्णव, शाक्त एवं समाज के अन्य वर्गों को जोड़ने का प्रयास किया है।

➢ कलापक्ष

आपकी रचनाओं में मुख्यतः अवधी तथा ब्रजभाषा का प्रयोग है। दोहा, चौपाई, सवैया, हरिगीतिका आपके प्रिय छन्द है। अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों की छटा दृष्टव्य है। इन्होंने अपने काव्य में सभी रसों का परिपाक किया है।

➢ साहित्य में स्थान

भारतीय संस्कृति और सामाजिक मूल्य के कुशल चितेरे हैं। तुलसीदास के साहित्य का जगत में अनुपम स्थान है।

गतिविधि क्रमांक – 2

तालिका संबंधी शिक्षण संकेत :– शिक्षक नीचे दी गई तालिका को छात्रों को समझाकर याद करवाएँ एवं उसकी समय–समय पर पुनरावृत्ति करवाएँ। इसके माध्यम से छात्र कवि परिचय संबंधी प्रश्नों को हल करने में सक्षम हो सकेंगे। कवि परिचय संबंधी प्रश्न लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा नवीन सत्र हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक में दिए गए हैं। शिक्षक उन प्रश्नों का अभ्यास करवाएँ।

कवि परिचय : एक दृष्टि, तालिका

क्र.	कवि का नाम, जन्म, मृत्यु एवं दो रचनाएँ	विशेषताएँ		साहित्य में स्थान
		भावपक्ष (भाव सौन्दर्य)	कलापक्ष (शिल्प सौन्दर्य)	
1	**सूरदास** जन्म–सन् 1478 मृत्यु–सन् 1583 रचनाएँ–'सूरसागर', 'सूरसारावली',	• कृष्ण की भक्ति • बाल लीलाओं का चित्रण • श्रृंगार के दोनो पक्षो के चित्रण	• ब्रजभाषा • गेयशैली • उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा एवं अनुप्रास अलंकार का प्रयोग	महाकवि सूरदास हिन्दी साहित्याकाश के सूर्य है, साहित्य में आपका विशिष्ट स्थान है।
2	**तुलसीदास जी** जन्म–सन् 1532 मृत्यु–सन् 1623 रचनाएँ– 'रामचरित मानस', 'कवितावली', 'विनयपत्रिका'	• दास्य भाव भक्ति • राम के कल्याणकारी रूप की उपासना • समन्वयवादी दृष्टिकोण	• ब्रज एवं अवधी का प्रयोग • दोहा, चौपाई, सवैया एवं हरिगीतिका छन्द का विशेष प्रयोग	तुलसीदास भ. ारतीय संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों के कुशल चितरे है इनका साहित्य जगत में अनुपम स्थान है।
3	**जयशंकर प्रसाद** जन्म–सन् 1889 मृत्यु–सन् 1937 रचनाएँ– 'आँसू', 'झरना', 'लहर '	• प्रेम एवं सौन्दर्य के कवि • नारी के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान • प्रकृति चित्रण • कल्पना की अधिकता • वेदना की अभिव्यक्ति	• उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा एवं अनुप्रास अलंकार का प्रयोग • सवैया कवित्त एवं अतुक. ांत छन्द	छायावाद के जनक जयशंकर प्रसाद का हिन्दी साहित्य के आधुनिक रचनाकारों में विशिष्ट स्थान है।
4	**सूर्यकांत त्रिपाठी निराला** जन्म–सन् 1899 मृत्यु–सन् 1961 रचनाएँ–'अनामिका', 'गीतिका', 'परिमल'	• स्वच्छन्दता, तुक और छन्द के बन्धन से रहित कविता • दार्शनिकता	• शुद्ध, संस्कृतनिष्ठ भाषा • कठिन एवं दुरूह शैली का प्रयोग	हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख आधार स्तम्भ है।

पद्य की व्याख्या

➢ सहायक सामग्री

कविता की पंक्तियों की तालिकाएँ, कवियों के चित्र, आदि।

शिक्षण संकेत

शिक्षक कक्षाओं में पद्यांश/काव्यांश का सन्दर्भ व प्रसंग सहित भावार्थ करवाते हैं। इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए कुछ मुख्य बिन्दुओं पर विचार कर सकते हैं।

बिन्दु

(1) पद्य के कवि व पाठ का नाम सर्वप्रथम याद करवाने का प्रयास करें।

(2) छात्र को यह अनुभूति करवाने का प्रयास करें कि कवि ने किन भावों व विचारों से यह पंक्तियाँ लिखी है।

(3) सन्दर्भ व प्रसंग पर ही भावार्थ आश्रित होता है। इन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दें।

(4) भावार्थ के लिए पद्य में आए कठिन शब्दों के प्रसंगानुकूल अर्थ को स्पष्ट करें।

(5) विशेष के लिए– काव्य सौन्दर्य (रस, छन्द, अलंकार, आदि) को लिखा जा सकता है।

गतिविधि

कार्ड सीटों में शब्द व अर्थ (नजदीकी) की पंक्तियाँ बनाकर शब्द गड्डी व अर्थ गड्डी से छात्रों को एक–एक पर्ची को उठाने को कहें। शब्द–अर्थ के मेल करने एक साथ पास–पास खड़े करें। अनमेल होने पर शब्द पंक्ति व अर्थ पंक्तियों में खड़े होने कहें। प्रक्रिया पूरी होने पर क्रमशः शिक्षण सामग्री के रूप में शब्द–अर्थ जोड़े का प्रयोग करें।

टीप – सांकेतिक पद्यांश को उद्धृत करते समय चार–पाँच चित्र क्रमशः ग्रीन बोर्ड या कक्षा–कक्ष या परिसर में लगाने का प्रयास करें। जिसे देख कर छात्र कुछ कुछ स्वयं ही जानने समझने की कोशिश में सफल होगा साथ ही रचनाकार का चित्र बनवाकर (छात्रों से) या अन्य स्त्रोतों से प्राप्त कर भी प्रदर्शित करना चाहिए चित्र रूप में देखी गई सामग्री ज्यादा समय तक मस्तिष्क में टिकती है।

धीरे–धीरे बच्चे स्वतः ही भावार्थ करने में समर्थ होंगे।

➢ मूल्यांकन

शिक्षक के लिए यह प्रक्रिया अनिवार्यतः प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से कर सुधार व सुझाव दिए जाने चाहिए।

भाव एवं विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न

गतिविधि क्रमांक–1

कुछ प्रश्नों को छात्र पूर्व से ही याद करके आएगे तथा सभी बारी–बारी से प्रश्नों के उत्तर, मौलिक अभिव्यक्ति में या सरल शब्दों में देने का प्रयास करेंगे। सभी छात्रों से दोहराने की गतिविधि भी करा सकते हैं।

गतिविधि क्रमांक–2

समूहवार दो–दो जोड़े बनाकर वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की गतिविधि का प्रयोग हम 2 अंकीय प्रश्नोत्तरी में भी कर सकते हैं। भाषायी कौशलों में सबसे प्रमुख कौशल ध्यान से सुनना, व सुनकर छात्रों को प्रश्नोत्तर

याद करना होगा। यहाँ पर हम यह गतिविधि छात्रों के समूह बनवाकर करेंगे।

एक छात्र अपने पास में बैठे छात्र से समूह बनाएँगे। दो–दो के जोड़ों में हम यह गतिविधि करेंगे।

- एक छात्र प्रश्न बोलेगा, दूसरा छात्र उत्तर सुनाएगा।
- पहले देखकर यह गतिविधि होगी बाद में बिना देख कर एकदूसरे को सुनाएँगे।
- इन्हीं प्रश्नों को दो बार देखकर लिखेंगे। एक बार बिना देखे लिखने का प्रयास करेंगे। सही उत्तर लिखने पर स्वयं अंक देंगे। गलत लिखने पर पुनः लिखेंगे।
- शिक्षक 5 या 10 प्रश्न लिखने पर मूल्यांकन करके हस्ताक्षर करेंगे।
- शिक्षक अपने रजिस्टर में अंकित अवश्य करें कि किस छात्र ने कितने प्रश्न याद किए हैं।
- कठिन प्रश्नों के उत्तरों को शिक्षक से पूछ सकते हैं।

इकाई 4 – भाषा बोध

निर्धारित इकाई से 8 अंक के प्रश्न परीक्षा में पूछे जाएँगे।

शिक्षण–संकेत

- शिक्षक विद्यार्थियों को संबंधित विषयवस्तु के सभी अंशों को सरल एवं रोचक गतिविधियों के माध्यम से समझाएँ।
- निदानात्मक कक्षाओं में अध्यापन कराते समय विषय से संबंधित टी.एल.एम. के रूप में यू–ट्यूब पर डले हुए वीडियो का अवश्य प्रयोग करें। प्रोजेक्टर न होने की स्थिति में शिक्षक कक्षा को समूहों में विभाजित कर क्रमशः प्रत्येक समूह का वीडियो दिखाएँ।

पाठ्यपुस्तक में दी गई संबंधित विषयवस्तु के अध्यापन के साथ शिक्षक निदानात्मक कक्षाओं में इस मॉड्यूल में दी गई विषयवस्तु का पुनः पुनः अध्यापन एवं अभ्यास कराएँ।

सन्धि

सन्धि शब्द का अर्थ है 'मेल' या जोड़। दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है वह संधि कहलाता है। संस्कृत, हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में परस्पर स्वरों या वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को सन्धि कहते हैं।

जैसे – सम् + तोष = संतोष ; देव + इंद्र = देवेंद्र ; भानु + उदय = भानूदय।

सन्धि के भेद

सन्धि तीन प्रकार की होती हैं –

- स्वर सन्धि
- व्यञ्जन सन्धि
- विसर्ग सन्धि

समास

जब भिन्न अर्थ वाले दो शब्द एक दूसरे के साथ मिलकर किसी नए अर्थ को बनाएं तो उसे समास कहते हैं। समास में कभी–कभी प्रथम पद गौण होता है, द्वितीय पद प्रधान होता है तो कभी–कभी प्रथम और द्वितीय दोनों ही पद गौण होते हैं तो कभी कभी दोनों ही पद प्रधान होते हैं।

समास प्रकार या भेद

समास के मुख्य रूप से 6 प्रकार होते है, जो निम्न हैं:

- अव्ययीभाव समास
- तत्पुरुष समास
- कर्मधारय समास
- द्विगु समास
- द्वंद्व समास
- बहुव्रीहि समास

➢ अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव समास इस तरह का समास है, जिसमें पहले पद में अनु, आ, प्रति, यथा, भर, हर इत्यादि जैसे अव्यय लगे होते हैं। इस प्रकार के समास में दोनों पदों के मेल से बना अर्थ प्रधान रहता है।

उदाहरण – आजीवन = जीवन भर
अप्रत्यक्ष = आंख के पीछे
यथोचित = जितना उचित हो

➢ तत्पुरुष समास

वह समास जिसमें द्वितीय अथवा उत्तर पद प्रधान होता है तत्पुरुष समास होता है।इस प्रकार के समास का समास विग्रह करते वक्त दोनों पदों के बीच 'का', 'के', की, 'के लिए' जैसे कारकीय चिह्नों का लोप हो जाता है और इनका पुनःसमास करने पर समस्त कारकीय चिह्नों को पुनः जोड़ दिया जाता है।

उदाहरण – युद्धक्षेत्र = युद्ध का क्षेत्र
देशद्रोही = देश को धोखा देने वाला
यशप्राप्त = यश को प्राप्त
कुलश्रेष्ठ = कुल में श्रेष्ठ

➢ कर्मधारय समास

कर्मधारय समास के दोनों पदों में से पहला पद गौण होता है और दूसरा पद प्रधान होता है। पहला पद विशेषण होता है, वहीं दूसरा पद विशेष्य होता है। इसके साथ ही प्रथम एवं द्वितीय पद के बीच में उपमेय और उपमान का संबंध होता है।

हालांकि उपमान भी उपमेय का ही विशेषता बताने का कार्य करता है। कर्मधारय समास का जब समास विग्रह किया जाता है तो दोनों पदों के बीच में "के समान है, जो, रूपी" इत्यादि शब्दों का लोप होता है।

उदाहरण – महादेव = महान है जो देव
नीलकमल = नील के समान कमल
पीतांबर = पीत है जो अंबर

➢ द्विगु समास

द्विगु समास में भी तत्पुरुष समास की तरह ही प्रथम पद गौण होता है और दूसरा पद प्रधान होता है। पहला पद संख्यावाची विशेषण होता है।

उदाहरण – चतुर्थभवन = चार भवनों का समाहार
पंचतंत्र = पाँच तंत्रों का समाहार
अष्टसिद्धियां = आठ सिद्धियों का समाहार
तिरंगा = तीन रंगों का समूह

➢ द्वंद्व समास

इस प्रकार का समास है, जिसमें दोनों ही पद प्रधान होते हैं। अर्थात कि इनमें से कोई भी पद गौण नहीं होता है। द्वंद्व समास में दो पदों के बीच में 'योजक' चिह्न लगा होता है, जो इसकी पहचान है।

उदाहरण – राजा–रानी = राजा और रानी
दिन–रात = दिन तथा रात
भूल–चूक = भूल या चूक
दाल–रोटी = दाल और रोटी

➢ बहुव्रीहि समास

इस समास में दोनों पद में से कोई भी पद प्रधान नहीं होता है। प्रथम और द्वितीय दोनों ही पद गौण होते हैं। परंतु दोनों ही पद मिलकर किसी तीसरे पद की विशेषता बताते हैं और वह तीसरा पद ही प्रधान होता है।

उदाहरण – पीतांबर = पीला है वस्त्र जिसका (भगवान विष्णु)
चारपाई = चार हैं पाए जिसके (पलंग)
तिरंगा = तीन रंग हैं जिसके (राष्ट्रीय ध्वज)
विषधर = विष को धारण किया है जिसने (महादेव)
गजानन = गज के समान आनन है जिसका (गणेश)

संधि तथा समास में अंतर

- संधि दो या दो से अधिक वर्णों से मिलकर बनी होती है, जबकि समास दो शब्दों का मेल होता है।
- संधि का विग्रह संधि विच्छेद कहलाता है, जबकि समास का विग्रह समास विग्रह कहलाता है।
- संधि विग्रह करते वक्त वर्णों का विग्रह होता है, जबकि समास का विग्रह करते वक्त दो शब्दों का विग्रह होता है।
- सन्धि तीन प्रकार की होती हैं , समास छः प्रकार के होते हैं।

आओ सीखें–

निर्देश– समूह (अ) में दिए गए मुहावरों के अर्थ समूह (ब) से मिलान करें

(अ)	(ब)
1. आग में घी डालना	1. धोखा देना
2. उल्टी गंगा बहाना	2. बैचेनी से प्रतीक्षा करना
3. चकमा देना	3. पोल (भेद) खुलना
4. तारे गिनना	4. क्रोध भड़कना
5. कलई खुलना	5. अनहोनी बातें करना

प्रश्न अभ्यास–

गतिविधि क्रमांक –1

कुछ प्रश्नों को छात्र पूर्व से ही याद करके आएँगे तथा सभी बारी–बारी से प्रश्नों के उत्तर मौलिक अभिव्यक्ति में या सरल शब्दों में देने का प्रयास करेंगे। सभी छात्रों से दोहराने की गतिविधि भी करा सकते हैं।

गतिविधि क्रमांक –2

समूहवार दो–दो जोड़े बनाकर वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की गतिविधि का प्रयोग हम 2 अंकीय प्रश्नोत्तरी में भी कर सकते हैं। भाषायी कौशलों में सबसे प्रमुख कौशल ध्यान से सुनना, व सुनकर छात्रों को प्रश्नोत्तर याद होगें। यहाँ पर हम यह गतिविधि छात्रों के समूह बनवाकर करेंगे।

- एक छात्र अपने पास में बैठे छात्र से समूह बनाएँगे। दो–दो के जोड़ों में हम यह गतिविधि करेंगे।
- एक छात्र प्रश्न बोलेगा, दूसरा छात्र उत्तर सुनाएगा।
- पहले देखकर यह गतिविधि होगी बाद में बिना देखे एक दूसरे को सुनाएँगे।
- इन्हीं प्रश्नों को दो बार देखकर लिखेंगे। एक बार बिना देखे लिखने का प्रयास करेंगे। सही उत्तर लिखने पर स्वयं अंक देंगे। गलत लिखने पर पुनः लिखेंगे।
- शिक्षक 5 या 10 प्रश्न लिखने पर मूल्यांकन करके हस्ताक्षर करेंगे।
- शिक्षक अपने रजिस्टर में अंकित अवश्य करें कि किस छात्र ने कितने प्रश्न याद किए हैं।
- कठिन प्रश्नों के उत्तर को शिक्षक से पूछ सकते हैं।

अभ्यास हेतु निर्देश

शिक्षक भाषा बोध संबंधी प्रश्नों का अभ्यास लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा नवीन सत्र हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक के माध्यम से करवाएँ।

इकाई 2 काव्यबोध

निर्धारित इकाई से 10 अंक के प्रश्न परीक्षा में पूछे जाएँगे।

शिक्षण–संकेत

- शिक्षक कक्षा को आवश्यकतानुसार 4 समूहों में विभाजित कर काव्यबोध संबंधी पाठ्यवस्तु का अध्यापन एवं बोध कराएँ।
- शिक्षक अलग–अलग समूहों को शिक्षण सामग्री के अनुरूप नाम दें यथा–रस समूह, छन्द समूह आदि।
- प्रत्येक समूह को उसके नाम के अनुसार विषयवस्तु वितरित कर उदाहरण और संबंधित प्रश्न पत्र तैयार करें और विद्यार्थियों को ऐसा करने हेतु प्रोत्साहित करें। प्रश्नों का प्रकार वस्तुनिष्ठ, लघुउत्तरीय प्रश्न के अनुरूप हों।
- प्रश्न तैयार होने पर शिक्षक द्वारा उन प्रश्नों के स्तर की जाँच की जाए एवं आवश्यकतानुसार पुनः मार्गदर्शन दिया जाए।
- प्रश्नों के परीक्षा पद्धति एवं ब्लूप्रिंट के अनुसार तैयार होने पर कक्षा में समूहों के बीच प्रश्नमंच कराया जाए, जिसमें एक समूह दूसरे समूह से (निर्धारित दोनों–वस्तुनिष्ठ, लघु उत्तरीय प्रश्न) प्रश्न पूछें और तीसरा समूह चौथे समूह से। आगे भी यही प्रक्रिया दोहराई जाए।

➢ 'काव्य के भेद' हेतु गतिविधि –

(1) पाठ्यपुस्तक में आए मुक्तक काव्य के उदाहरण की पहचान कराना।

(2) शिक्षक पाठ्य पुस्तक से उदाहरण लेकर काव्य के आंतरिक एवं बाह्य स्वरुप के निर्धारक कारक स्पष्ट कर छात्रों से पूछें।

(3) महाकाव्य और खंडकाव्यों के नाम व उनके रचनाकारों के नाम लिखिए।

➢ 'रस' हेतु गतिविधि–

10 कार्डों में रसों के नाम लिखकर छात्रों को समूह में बाँट दें। फिर उनसे रस का स्थायी भाव तथा परिभाषा और उदाहरण पूछें।

चार्ट पेपर बनवाएँ जिसमें रसों के नाम एवं उनके स्थायी भाव लिखे हों।

रस के अंगों का चार्ट पेपर बनवाकर कक्षा में लगवाएँ।

रसों के अन्य उदाहरण छात्रों से पूछें।

छन्द

छन्द की परिभाषा – "कविता के शाब्दिक अनुशासन का नाम छन्द है।"

छन्द की परिभाषा – "जिस काव्य में मात्रा, वर्ण, गण, यति, लय आदि का विचार करके शब्द योजना की जाती है उसे छन्द कहते हैं।"

उदा. – वरषा विगत शरद ऋतु आई, लक्ष्मण देखहु परम सुहाई।

फूले कांस सकल महि छाई, जनु वरषा कृत सकत बुढ़ाई।।

➢ मात्रा लगाने के नियम

सभी ह्रस्व स्वरों और उनके योग से उच्चारित वर्णों पर लघु मात्रा लगती है।

दीर्घ स्वरों और उनके सहयोग से उच्चारित व्यंजनों पर गुरू मात्रा लगती है।

अनुस्वार और विसर्ग युक्त वर्णों पर गुरु मात्रा लगती है चाहें वे ह्रस्व वर्ण ही हों।

संयुक्त अक्षर से पूर्व के वर्ण पर गुरु मात्रा लगती है। यदि शब्द का पहला वर्ण संयुक्त है तो उस पर वर्ण के अनुसार मात्रा लगेगी अर्थात् यदि वह लघु वर्ण है तो लघु और दीर्घ वर्ण है तो गुरू मात्रा लगेगी।

संयुक्ताक्षर के पूर्व के वर्ण पर यदि बल नहीं पड़ता तो उसकी मात्रा लघु ही रहेगी।

➢ गण का स्वरुप

तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं। वर्णिक छन्दों में वर्ण की गणना की जाती है। उन वर्णों की लघुता और गुरूता के विचार से गणों के आठ रुप होते हैं।

दोहा – *दोहा छन्द का सूत्र "तेरह विषम न जादि में, सम ग्यारह कलान्त।"*

इस दोहा में चार चरण होते हैं। पहले और तीसरे चरण में तेरह–तेरह मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में ग्यारह–ग्यारह मात्राएँ होती हैं। चरण के अन्त में यति होती है। इसके पहले और तीसरे चरणों के आदि में जगण नहीं होना चाहिए। दूसरे व चौथे चरण के अन्त में 1 लघु अवश्य होना चाहिए।

विशेष – दोहा भी बरवै के समान दो दलों में लिखा जाता है।

दोहा छन्द के नियम, दोहा छन्द पहचानने का तरीका

(1) दोहा छन्द में पहले और तीसरे चरण में 13–13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11–11 मात्राएँ होती हैं।

(2) दोहा छन्द में पहले और तीसरे चरणों के आदि में जगण नहीं होना चाहिए।

(3) दोहा छन्द में दूसरे व चौथे चरण के अन्त में 1 लघु अवश्य होता है।

➢ दोहा छन्द के उदाहरण–

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय।

जा तन की जाँई परे, श्याम हरित दुति होय।।

यहाँ पर पहले और तीसरे में 13 –13 तथा दूसरे और चौथे में 11 – 11 मात्राएँ हैं, अतः यहाँ पर दोहा छन्द है।

अलंकार के भेद

शब्दालंकार	अर्थालंकार	उभयालंकार
(जहाँ शब्दों के प्रयोग से सौंदर्य में वृद्धि होती है)	(जहाँ शब्दों के अर्थ से चमत्कार उत्पन्न होता है)	(जहाँ शब्द और अर्थ दोनों के प्रयोग से चमत्कार उत्पन्न होता है)

1. अतिशयोक्ति अलंकार

लक्षण – जहाँ कोई बात आवश्यकता से अधिक बढ़ा–चढ़ाकर कही जाती है, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है; जैसे–

"हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग। लंका सारी जरि गई, गये निसाचर भाग।।"

यहाँ बात को बढ़ा–चढ़ाकर वर्णन हुआ है। अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।

2. अन्योक्ति अलंकार

लक्षण – जहाँ प्रस्तुत कथन के द्वारा अप्रस्तुत अर्थ का बोध कराया जाए वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है; जैसे–

"माली आवत देखकर, कलियन करी पुकारि। फूले–फूले चुनि लिए, कालि हमारी बारि।।"

3. मानवीकरण अलंकार

जब जड़ पदार्थों और प्रकृति के अंग (नदी, पर्वत, पेड़, लताएँ, झरने, हवा, पत्थर, पक्षी) आदि पर मानवीय क्रियाओं का आरोप लगाया जाता है अर्थात् मनुष्य जैसा कार्य व्यवहार करता हुआ दिखाया जाता है तब वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है जैसे हर्षाया ताल लाया पानी परात भरके)

काव्य बोध के प्रश्नों को लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा नवीन सत्र हेतु जारी किए गए प्रश्न बैंक से लेकर उत्तर मॉड्यूल की विषय सामग्री से हल करवाएँ, जिसके लिए व्याख्यान विधि, चर्चा विधि तथा प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग करें।

इकाई 9. कृतिका भाग – 2

निर्धारित इकाई से 8 अंक के प्रश्न परीक्षा में पूछे जाएँगे।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की तैयारी मॉड्यूल के इकाई क्रमांक 1, वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की गतिविधियों के माध्यम से करवाएँ एवं अन्य प्रश्नों की तैयारी लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा नवीन सत्र हेतु जारी की गई प्रश्न बैंक में दिए गए प्रश्नों के अभ्यास से करवाएँ।

@ASK_Classes

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्त्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्त्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह–

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हो;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके ; और

(ट) यदि माता–पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने यथास्थिति बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

@ASK_Classes